बिहार विधान सभा भवन शताब्दी वर्ष समारोह एवं माननीय राष्ट्रपति का ‘‘सदन में विमर्श ही संसदीय प्रणाली का मूल है’’ विषय पर

<u>व्याख्यान</u>

तिथि : 21-10-2021

समय– 10.50 बजे पूर्वाह्न

बिहार विधान सभा भवन शताब्दी वर्ष समारोह एवं माननीय राष्ट्रपति का ''सदन में विमर्श ही संसदीय प्रणाली का मूल है'' विषय पर व्याख्यान

दिनांक- 21.10.2021 समय- 10.50 बजे पूर्वाह्न

बिहार विधान-सभा परिसर में माननीय राष्ट्रपति महोदय के आगमन के पश्चात् उनके कर-कमलों द्वारा शताब्दी स्मृति स्तंभ का शिलान्यास एवं पवित्र बोधि वृक्ष के शिशु पौधे का रोपण हुआ ।

मुख्य समारोह स्थल

(इस अवसर पर माननीय राष्ट्रपति महोदय, महामहिम राज्यपाल महोदय, माननीय मुख्यमंत्री, माननीय उप मुख्यमंत्रीगण, माननीय अध्यक्ष, बिहार विधान सभा एवं माननीय सभापति, बिहार विधान परिषद् मंचासीन हुए ।)

(राष्ट्रीय धुन)

दीप प्रज्वलन

(माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया ।)

स्मारिका का विमोचन

(महामहिम राज्यपाल महोदय द्वारा बिहार विधान सभा का स्मारिका का विमोचन किया गया ।

पांच सामाजिक संकल्प अभियान का शुभारम्भ

(माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा पांच सामाजिक संकल्प अभियान का रिमोट से शुभारम्भ किया गया।)

स्वागत भाषण

अध्यक्ष, बिहार विधान सभा : आज गौरवशाली क्षण में हमारे बीच मंचासीन भारत के माननीय राष्ट्रपति परम् आदरणीय श्री रामनाथ कोविंद जी, बिहार के महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान जी, बिहार के यशस्वी, दूरदर्शी और कुशल नेतृत्वकर्ता माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी, बिहार विधान परिषद् के माननीय कार्यकारी सभापति श्री अवधेश

टर्न-1 से 5/सत्येन्द्र-मधुप-आजाद-पुलकित-अभिनीत/

नारायण सिंह जी, बिहार के माननीय उपमुख्यमंत्री श्री तारकिशोर प्रसाद जी एवं उपमुख्यमंत्री बहन श्रीमती रेणु देवी जी और इस सभागार में उपस्थित सभी महानुभावों !

मैं सबसे पहले अपने, आप सबकी और सभी बिहारवासियों की तरफ से यहां हमारे बीच मौजूद भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी का तहेदिल से स्वागत करता हूं । मैं आभारी हूं कि इस कार्यक्रम में आपने आने की कृपापूर्ण सहमति प्रदान कर बिहार के प्रति अपने लगाव को न केवल दर्शाया है बल्कि बिहार को एक बार फिर गौरवान्वित होने का मौका प्रदान किया है । माननीय राष्ट्रपति महोदय जी का बिहार से बहुत गहरा लगाव रहा है, हमारे बीच उनकी उपस्थिति हमें सुखद और आत्मीय अहसास करा रही है जिसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता । पुनः माननीय राष्ट्रपति जी का हृदय से आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद देते हैं ।

यह सुखद संयोग ही है कि एक ओर देश आजादी के 75वें वर्ष के उपलक्ष्य में आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष समारोह मना रहा है । बिहार विधान सभा का गौरवशाली अतीत है । अपनी लंबी ऐतिहासिक यात्रा में उसने कई पड़ाव देखे हैं । यह भवन सौ वर्ष की राजनीतिक और बौद्धिक यात्रा का मूर्त गवाह ही नहीं बल्कि हमारी समृद्ध विरासत भी है और यहां उपस्थित हम सबों का यह सौभाग्य रहा है कि हमें कभी न कभी इस यात्रा में शामिल होकर बिहार की जनता-जनार्दन के आशीर्वाद से उनकी सेवा करने का सुयश मिला । अपनी इस यात्रा में बिहार विधान सभा भवन उच्च लोकतांत्रिक मूल्यों, ऐतिहासिक निर्णयों एवं जनकल्याण के लिए समर्पित भागीरथ प्रयासों का साक्षी भी रहा है । इस समारोह के आयोजन के लिए जब मैंने माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी से चर्चा की तब उन्होंने न केवल मेरा उत्साह बढ़ाया बल्कि इसमें अपनी व्यक्तिगत रुचि लेकर हमारा मार्गदर्शन भी किया । इसके लिए मैं व्यक्तिगत रूप से उनका आभारी हूं । बिहार के लोग तो अपनी मेधा, श्रमशीलता, क्रियाशीलता और सक्रियता के लिए पूरी दुनिया में जाने जाते हैं और इन्हीं गुणों के बल पर हमने अपनी अस्मिता और पहचान बनाए रखी है । 7 फरवरी, 1921 को बिहार के प्रथम राज्यपाल लॉर्ड सत्येंद्र प्रसाद सिन्हा द्वारा इस भवन का उद्घाटन किया गया था । आज यही भवन बिहार विधान सभा के रूप में जाना जाता है । इस भवन का डिजाइन प्रख्यात वास्तुविद् ए0एन0 मिलवुड ने तैयार किया था । इतालवी पुनर्जागरण शैली में बना यह भवन कई मायनों में खूबसूरती को

समेटे हुए है जो इसे विशिष्ट बनाता है । विरासत का सम्मान ही हमारी पहचान है और कहा भी गया है कि

निज गौरव पर जिसे हो न अभिमान,
वह नर नहीं पशु समान ।

समय के साथ सबकुछ बदलता है पर इतिहास हमेशा जिन्दा रहता है । यह भवन कई महत्वपूर्ण बदलाव का गवाह रहा है । देश की आजादी में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले महात्मा गांधी को चम्पारण सत्याग्रह से ही पहचान मिली । चंपारण के एक साधारण किसान पंडित राजकुमार शुक्ल के असाधारण संकल्प ने उन्हें महात्मा बनाते हुए आजादी की लड़ाई का नेतृत्वकर्ता बना दिया । वीर कुंवर सिंह, डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, मौलाना मजहरूल हक, ब्रजकिशोर प्रसाद, डॉ0 श्रीकृष्ण सिंह, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर, हमारे सात शहीद, लोक नायक जय प्रकाश नारायण और जननायक कर्पूरी ठाकुर आदि हमारे समृद्ध राजनीतिक विरासत हैं । इन सभी महापुरूषों से एक सीख मिलती है कि राष्ट्र सेवा और राष्ट्रहित सर्वोपरि है ।

बिहार विधान सभा ने अपने सौ साल में जनता-जनार्दन के जीवन को सुगम, सरल और सुखमय बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण विधेयक भी पास किया है जो पूरे राष्ट्र के लिए नजीर बना है । आज बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री और आधुनिक बिहार के निर्माता बिहार केसरी डॉ0 श्रीकृष्ण सिंह जी की जयंती भी है । मैं उनको नमन करता हूं । उनके शासनकाल में जमींदारी प्रथा उन्मूलन विधेयक भी पास हुआ । वहीं शराबबंदी, पंचायती राज और स्थानीय निकाय में महिलाओं को 50 प्रतिशत की हिस्सेदारी देने संबंधी विधेयक भी पारित हुआ । जल-जीवन-हरियाली कार्यक्रम की नींव भी यहीं पड़ी ।

17वीं बिहार विधान सभा की अवधि मात्र अभी लगभग 11 माह ही बीती है । इस अल्पावधि में ही सदन में कई विषयों पर सार्थक विमर्श हुआ । विधायकों की गंभीरता, सरकार की सजगता तथा संवेदनशीलता से शत-प्रतिशत प्रश्नों के उत्तर प्राप्त होना, सदन में रिकॉर्ड शून्यकाल की सूचनाएं लिया जाना और सत्रों में शत प्रतिशत सदन का चलना, लोकतंत्र की मजबूती की निशानी और अपने आप में एक ऐतिहासिक उपलब्धि रही है जिसके लिए सभी बधाई के पात्र हैं । सदन की गतिविधियों को जनता तक पहुंचाने के लिए फेसबुक, यू-ट्यूब पर लाईव प्रसारण की व्यवस्था बनाई गयी ।

आज माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा शताब्दी समृति स्तंभ की आधारशिला रखी गई है । यह एक अष्टकोणीय स्तंभ होगा जिसमें कुल सौ पट्टिकाएं होंगी जो बिहार विधान सभा भवन की सौ साल की अवधि का द्योतक होगा । विरासत और धरोहर का संरक्षण भी हमारा कर्त्तव्य है इसमें माननीय मुख्यमंत्री जी की गहरी रूचि प्रशंसनीय है । माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा इसी पार्क में बोधगया से लाये गये पवित्र बोधिवृक्ष के शिशु पौधे का रोपण भी किया गया है जो इस परिसर को और अधिक पवित्र तथा ऊर्जावान बनायेगा । यह हमें मानसिक शांति तथा सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करेगा । बोधिवृक्ष के शिशु पौधे को उपलब्ध कराने के लिए हम माननीय मुख्यमंत्री जी का आभार व्यक्त करते हैं ।

बिहार विधान सभा बिहार में लोकतंत्र का सबसे बड़ा मंदिर है । हम सब जनसेवक हैं । जनता–जनार्दन है उसकी नजरों में कुछ नहीं छिपता है । हम सबों पर जनता के जीवन को सरल और सुगम बनाने के लिए सदन में कानून बनाने, प्रश्न पूछने तथा अन्य संसदीय प्रक्रियाओं को अपनाने का अधिकार मिला है । सदन में जितना सार्थक विमर्श होगा हम जनता की नजर में उतने ही खरे उतरेंगे । सार्थक विमर्श से ही किसी भी विषय पर हम किसी ठोस निर्णय तक पहुंच सकेंगे और अपनी जिम्मेवारियों का निर्वहन कर सकेंगे । ऐसे में हमें सदन की गरिमा, मर्यादा और सम्मान के अनुकूल ही अपना व्यवहार संयम रखते हुए अपनी बात रखनी है और विमर्श करना है । ऐसा करने से लोकतंत्रीय अवधारणा को मजबूती मिलेगी ।

अपने राजनीतिक जीवन में मैंने बड़ी शिद्दत से यह महसूस किया है कि यदि परिवार सही दिशा में चले और नैतिक रूप से मजबूत हो तो समाज में कई सकारात्मक बदलाव आयेंगे और दूरगामी प्रभाव पड़ेगा । आज समाज में अनगिनत परिवार कई सामाजिक अभिशापों और कुरीतियों के चक्रव्यूह में फंसे हुए हैं, वे इससे मुक्त होकर राष्ट्र निर्माण के वाहक बन सकते हैं । हमें संकल्प लेना होगा कि हमें अपने परिवार को 5 सामाजिक अभिशापों से मुक्त, 5 वरदानों से युक्त और 5 सम्मानों से पूर्ण बनाना होगा । आज मैं माननीय राष्ट्रपति महोदय, माननीय राज्यपाल महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी और आप सबके सामने शपथ भी लेता हूं कि हमारा परिवार नशा मुक्त, हमारा परिवार अपराध मुक्त, हमारा परिवार बाल श्रम मुक्त, हमारा परिवार बाल विवाह मुक्त और हमारा परिवार दहेज मुक्त बनेगा । हमारा परिवार पांच सामाजिक वरदानों से युक्त होगा, हमारा परिवार पांच सामाजिक सम्मानों से पूर्ण होगा, यह डिजिटल साक्षर होगा, स्वरोजगार प्रेरक होगा,

रोजगार सृजनकर्ता होगा, हम सामाजिक योद्धा बनेंगे और सेवा समर्पण दाता बनेंगे । आज माननीय राष्ट्रपति जी ने इस संकल्प का शुभारंभ मेरे घर से करते हुए हमारे परिवार को राष्ट्र निर्माण में वाहक बनने का मौका दिया, इसके लिए हम इनके कृतज्ञ हैं । आज हमारा परिवार पांच सामाजिक वरदानों से युक्त, जो प्रधानमंत्री जी और माननीय मुख्यमंत्री जी दोनों की सोच है और स्वस्थ राष्ट्र बनाने की ओर कदम है, स्वच्छता युक्त हमारा परिवार होगा, योग आयुर्वेद युक्त हमारा परिवार होगा, जल संचय युक्त हमारा परिवार होगा, प्रकृति युक्त हमारा परिवार होगा तब विरासत युक्त हमारा परिवार बनेगा । इस संकल्प अभियान में सभी जनप्रतिनिधियों और बुद्धिजीवियों से भी खुलकर सहयोग की अपेक्षा करूंगा । इस कार्यक्रम में किसी भी तरह के आर्थिक अनुदान की जरूरत नहीं है, न किसी के दान की जरूरत है, यह हमारे मन के अंदर एक संकल्प लेने की जरूरत है, जो 21वीं सदी के भारत, स्वामी विवेकानंद जी के उस भविष्यवाणी को सत्य की ओर चरितार्थ करेगा कि 19वीं सदी में उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि 21वीं सदी भारत का होगा और भारत विश्व गुरू बनेगा । मन से अगर हम संकल्प लेंगे तो इस अभियान के द्वारा हम परिवार को मजबूत करेंगे और इससे समाज और राष्ट्र को भी मजबूती प्रदान करने में मदद मिलेगी । यह संकल्प राष्ट्र निर्माण का अभियान है । यह मुक्त-युक्त-सम्मान, सामाजिक संकल्प अभियान दरअसल संविधान प्रदत्त मौलिक कर्त्तव्य और हमारे नैतिक दायित्व का सम्मिश्रण है, जिसे हर परिवार को अपनाना चाहिए । मेरा यही प्रयास है कि राज्य में प्रत्येक परिवार तक इस संकल्प को पहुंचाया जाय । हम सभी जनप्रतिनिधियों को लाखों लोगों के विश्वास पर खरा उतरने के लिए अपनी सामाजिक तथा नैतिक जिम्मेवारियों का भी निर्वहन करना पड़ता है ।

''अपने लिए जीना एक कहानी है,
औरों के लिए जीना एक जिंदगानी है।''

स्वामी विवेकानंद जी ने 19वीं सदी में भारत की 21वीं सदी की जो भविष्यवाणी और झलक दिखाया था, उसके हम गवाह न बनें, हम सब भागीदार बनें, यह मन के अंदर संकल्प लेकर के नये राष्ट्र के निर्माण में, 21वीं सदी के राष्ट्र के निर्माण में हम सबको कदम बढ़ाना है । मां भारती की हम सभी संतानों को जाति, धर्म, स्थान, भाषा और लिंग भेद को भुलाकर युवाओं के चरित्र निर्माण और नैतिक समर्थन के लिए दृढ़ संकल्प लेना होगा । यह राष्ट्र निर्माण में मील का पत्थर साबित होगा । बिहार लोकतंत्र की जननी है, इसकी अपनी समृद्ध राजनीतिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत

रही है । यह ज्ञान-विज्ञान की अद्‌भुत प्रयोगशाला भी रही है । इतिहास गवाह है कि बिहार ने हमेशा देश-दुनिया को नई राह दिखायी है । इस शताब्दी कार्यक्रम के माध्यम से पूरे देश और दुनिया में एक अभिनव संदेश जायेगा और इससे लोकतंत्र की जड़ें और मजबूत होंगी, ऐसा मुझे विश्वास है।

एक बार फिर से माननीय राष्ट्रपति जी का इस कार्यक्रम में समय और मार्गदर्शन देने के लिए हृदय से आभार प्रकट करता हूं । जय बिहार, जय हिंद, वंदे मातरम् ।

टर्न-2/21.10.2021

श्री नीतीश कुमार, मुख्यमंत्री, बिहार : भारत के महामहिम राष्ट्रपति आदरणीय श्री रामनाथ कोविन्द जी, बिहार के महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान जी, बिहार विधान सभा के माननीय अध्यक्ष श्री विजय कुमार सिन्हा जी, बिहार विधान परिषद् के माननीय सभापति श्री अवधेश नारायण सिंह जी, बिहार के माननीय उपमुख्यमंत्री श्री तारकिशोर प्रसाद जी, माननीया उपमुख्यमंत्री श्रीमती रेणु देवी जी, बिहार सरकार के संसदीय कार्य एवं शिक्षा मंत्री श्री विजय कुमार चौधरी जी, इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी माननीय मंत्रीगण, बिहार विधान सभा एवं बिहार विधान परिषद् के सभी माननीय सदस्यगण, सांसदगण, बिहार विधान सभा एवं बिहार विधान परिषद् के पूर्व सदस्यगण, पूर्व सांसदगण, यहां उपस्थित अधिकारीगण, विशिष्ट अतिथिगण, प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के सभी पत्रकार मित्रों, छायाकार बंधुओ, कार्यक्रम में उपस्थित बहनों एवं भाईयों !

आज बिहार विधान सभा भवन के 100 साल पूरा होने के बाद उसके उपलक्ष में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन हमारे विधान सभा के माननीय अध्यक्ष श्री विजय कुमार सिन्हा जी ने किया है और इस अवसर पर आदरणीय राष्ट्रपति महोदय ने जो समय दिया, इनके अनुरोध को, सब लोगों के अनुरोध को इन्होंने स्वीकार किया और यहां आने का समय दिया इसके लिए मैं उन्हें हृदय से धन्यवाद देता हूं और उनका मैं अभिनन्दन करता हूं कि आज वे यहां पधारे हैं और उनसे तो यहां का रिश्ता बहुत पुराना है । जो हमारे आदरणीय राष्ट्रपति जी हैं श्री रामनाथ कोविन्द जी, सबको मालूम है कि हमारे यहां बिहार में लगभग 2 साल के लिए राज्यपाल रहे थे लेकिन राज्यपाल के बाद पहली बार

राष्ट्रपति होने का अवसर इनको मिला, यह कोई मामूली बात नहीं है बहुत ही विशेष बात है । जब ये राष्ट्रपति बने तो हम तो सदैव कहते हैं कि हमारे बिहार के ही हैं ये तो पूरे देश के राष्ट्रपति हैं लेकिन हम बिहारी लोग इनको बिहारी भी कहते रहते हैं चूंकि यहां के राज्यपाल थे । पहले भी एक राज्यपाल राष्ट्रपति बने स्वर्गीय जाकिर हुसैन साहब, वे पहले यहां राज्यपाल थे बहुत पहले लेकिन वे पहले उपराष्ट्रपति बने और तब वे राष्ट्रपति बने लेकिन हमारे श्रद्धेय श्री रामनाथ कोविन्द साहब तो राज्यपाल से सीधे राष्ट्रपति बने । यह कोई मामूली बात नहीं है, इतनी बड़ी प्रतिष्ठा हुई है ।

हमलोगों को बेहद खुशी होती है, यहां पर कई बार इन्हें आने का मौका मिला, हमलोगों ने आमंत्रित किया, राष्ट्रपति जब बने उसके बाद इनको पहली बार कार्यक्रम के लिए हमलोगों ने आमंत्रित किया, जो तीसरे कृषि रोड मैप की शुरूआत हमलोगों को करवानी थी तो इन्होंने 9 नवंबर 2017 से किया । इसके बाद ये खुद आए, डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में ये पधारे 15 नवंबर, 2018 को । फिर हमने इनसे विशेष तौर पर मिलकर के आग्रह किया और उसको इन्होंने स्वीकार किया । जो विश्व शान्ति स्तूप राजगीर में है उसका 50वाँ वार्षिकोत्सव था, उसके लिए ये 25 अक्टूबर, 2019 को पधारे । जो विश्व शान्ति स्तूप बना फूजी गुरूजी ने इसका निर्माण कराया, जापान के हैं, वे भारत में रहते थे आजादी के पहले, उनकी कितनी बड़ी भूमिका थी, उन्होंने जो विश्व शान्ति स्तूप का निर्माण करवाया और उसका शिलान्यास 6 मार्च, 1965 को उस समय के आदरणीय राष्ट्रपति डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी ने किया था । जब बनकर वह तैयार हो गया तो 25 अक्टूबर, 1969 को उसका उद्घाटन किया था उस समय के आदरणीय राष्ट्रपति श्री वी0वी0 गिरी जी ने । इसलिए सब लोगों की इच्छा थी कि आज 50 साल पूरा हो रहा है और फिर आदरणीय राष्ट्रपति जी को इस कार्यक्रम पर आना चाहिए तो हम गए थे, इन्होंने हमलोगों की बात को स्वीकार किया और आये । वह इतना अच्छा कार्यक्रम हुआ, सब लोगों को इस बात को लेकर प्रसन्नता हुई ।

आज यहां पर पधारे हैं इसके लिए हम सब लोगों को बड़ी खुशी है और यहां पर हमारे विधान सभा के माननीय अध्यक्ष श्री विजय कुमार सिन्हा जी ने बहुत सारी बातें रख दी हैं यहां के बारे में । आप सब तो जानते ही हैं कि आखिरकार 22 मार्च, 1912 को बंगाल से अलग हुआ था बिहार, उस समय बिहार के साथ उड़ीसा भी उसका हिस्सा था और उसी समय से, जब बाद में हमलोगों को अवसर मिला तो 22 मार्च को हमलोगों

ने 2009 से ही कार्यक्रम करना शुरू किया जो बिहार दिवस के रूप में हमलोगों ने इसको मनाना शुरू किया है । इसके अलावे जब 2009 से हमलोगों ने शुरू किया, 2012 में 100 साल पूरा होने के बाद जो जबर्दस्त कार्यक्रम हुआ लेकिन इसी बीच में जो हमारे उस समय बिहार विधान परिषद् के माननीय सभापति थे स्वर्गीय ताराकांत झा जी, उन्होंने इतनी मेहनत की उसको हमेशा याद रखा जाना चाहिए, कितनी मेहनत की उन्होंने और जो विधायी परिषद् बना था उसके लिए, 22 मार्च, 2011 से विधायी परिषद् की स्थापना के शताब्दी समारोह का यानी 2012 में हुआ । उन्होंने उसके लिए 2011 से ही कार्यक्रम शुरू किया और उसमें बुलाया था उस समय की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल जी को । उन्होंने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभायी एक-एक चीज जो पुराना इतिहास था जो कुछ भी यहां पर बना था उन सब चीजों के बारे में सारी चीजों को उन्होंने प्रकाशित किया और लोगों के सामने लाया था और इसी के साथ साथ जो सब कुछ था । उसके बाद पूरे एक साल का उन्होंने कार्यक्रम निर्धारित कर दिया था और फिर 3 मई, 2011 को पूर्व राष्ट्रपति आदरणीय डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम साहब को बुलाया गया था । उन्होंने इस विषय पर बहुत सारी बातें रखीं, ये सब काम वे करते रहे और उस समय जो विधायी परिषद बना था उस विधायी परिषद की पहली बैठक इसके बनने के बाद हुई थी, 20 जनवरी, 1913 को । जो पहली बैठक हुई थी यह पटना कॉलेज में हुई थी और इसका भी उन्होंने खोजकर निकाला कि कहां पर हुआ था इसके बाद हमलोगों द्वारा 2012 में पटना कॉलेज में 100वें साल में एक कार्यक्रम वहां भी किया गया । इन सब कामों की उन्होंने शुरूआत की और हमलोगों ने बिहार दिवस की शुरूआत की । उसके बाद जो बिहार विधान सभा का भवन बना, जब इसका भवन तैयार हुआ, जब इसकी साइज बढ़ी, पूरे तौर पर मान्यता मिल गई, सब कुछ हुआ तब उसके बाद यहां पर जो काम शुरू हुआ, 1920 में परिषद् भवन का निर्माण कराया गया और इसीलिए आज जो कार्यक्रम हो रहा है 100 साल पूरा होने के बाद, ये जो परिषद् भवन का निर्माण हुआ था और अब यह बिहार विधान सभा भवन कहलाता है लेकिन एक बात और हुई 2016 से ही, उस समय श्री विजय कुमार चौधरी जी जो अभी मंत्री हैं उस समय विधान सभा के अध्यक्ष थे, उन्होंने 2016 से ही शुरू करवाया था कि बिहार विधान सभा भवन के भी समारोह की शुरूआत होनी चाहिए, इसका शुरू करना चाहिए हमलोगों को और इन्होंने वही तारीख से उस समय शुरू करवा दिया था और इसके लिए ये भी बधाई के पात्र हैं जो इन्होंने 7 फरवरी, 2016 से ही काम शुरू किया था । उस समय जो नए

विधायक आए थे, उस समय संभवतः जो मुझको याद है लगभग 98 थे और उन लोगों की ट्रेनिंग का, ट्रेनिंग शब्द कहना तो उचित नहीं है, ट्रेनिंग तो नहीं कहा जाता है, विधायकों की ट्रेनिंग तो नहीं होती है लेकिन उनके बीच में बहुत सारी बातें उनको बताने का यह सब काम उन्होंने किया है । यह काम चार साल तक होता रहा किसी न किसी प्रकार से कार्यक्रम के माध्यम से ।

अभी जो हमारे माननीय अध्यक्ष हैं श्री विजय बाबू इन्होंने सोचा कि सौ साल पूरे हो गये हैं तो हमलोग निश्चित तौर पर कार्यक्रम आयोजित करें । इस बीच फिर सब जगह कोरोना हो गया, इस कार्यक्रम में कोरोना के चलते थोड़ा सा विलम्ब हुआ । आदरणीय श्रद्धेय राष्ट्रपति जी से अनुमति ली गयी । माननीय राष्ट्रपति जी ने समय दिया, आज इनके पधारने का मौका मिला । एक-एक चीज, आज कम-से-कम कार्यक्रम हो रहा है यह बहुत अच्छी बात है । अब इसको लेकर सब लोगों को जानकारी रहेगी और जो भी हमारा पुराना इतिहास है, आजादी की जो लड़ाई है उससे लेकर एक-एक बात की जानकारी सब लोगों को मिलती रहेगी और नई पीढ़ी के लोग जानते रहेंगे, इस उद्देश्य से इस कार्यक्रम को आयोजित किया गया है।

बिहार विधान सभा का यह जो भवन है, इसमें हमलोगों को काम करने का मौका बिहार के लोगों ने दिया है, हमलोगों ने बिहार विधान सभा भवन का भी एक्सपेंशन कराया है । सब तरह से कई प्रकार से हमलोगों ने इसका एक्सपेंशन कराया है, यह सब लोगों को मालूम हैं । हमलोग हर तरह से सारा काम करने की कोशिश कर रहे हैं और इस अवसर पर बहुत खुशी की बात है और जो निर्णय हुआ, आज आदरणीय राष्ट्रपति जी ने शताब्दी स्मृति स्तंभ का शिलान्यास किया है जिसके बारे में हमारे विधान सभा के माननीय अध्यक्ष ने चर्चा कर दी है, यह बहुत अच्छी चीज है । आज राष्ट्रपति महोदय ने स्मृति स्तंभ का शिलान्यास कर दिया है जब यह स्मृति स्तंभ बनकर तैयार होगा तो वह इतना सुंदर लगेगा, यह कितना बढ़िया होने वाला है, इस बात को आपलोग जान लीजियेगा। उसी समय हमारी इच्छा भी थी कि जब हमलोग यह सब काम कर ही रहे हैं तो हमलोगों को यहां बोधि वृक्ष भी लगाना है । यह सब हमलोगों ने मिलकर तय किया और बोध गया से मँगाकर आज यहाँ बोधि वृक्ष के शिशु पौधे का रोपण भी हो गया । अब आप जान लीजिये कि बोधि वृक्ष क्या है ? भगवान बुद्ध को वहां ज्ञान की प्राप्ति हुई, यहां पर बोधि वृक्ष के लगने का मतलब है कि जितने लोग भी यहां आयेंगे, जब कभी भी यहां लोगों के प्रतिनिधि बनकर के आयेंगे तो सबका और ज्ञान बढ़ेगा । इस

बोधि वृक्ष का इतना बड़ा महत्व है इसलिए बोधि का वृक्ष का रोपण भी यहां पर किया गया ।

हमारे श्रद्धेय राष्ट्रपति जी को तो सब मालूम है और कल राष्ट्रपति जी बुद्ध स्मृति पार्क जाने वाले भी हैं । हर तरह से जो कुछ भी काम वहां हुआ है, बुद्ध स्मृति पार्क हम लोगों ने बनवाया और बुद्ध स्मृति पार्क में अनेक चीजों का निर्माण हमलोगों ने करवाया और वहां पर बोध गया का और श्रीलंका के अनुराधापुर का बोधि वृक्ष लगाया गया है और बाद में मालूम हुआ कि श्रावस्ती जो उत्तर प्रदेश में है वहां भगवान बुद्ध 14 साल तक रहे थे, यह बाद में मालूम हुआ । तब वहां से भी मंगवाकर के बोधि वृक्ष हमलोगों ने यहां पर लगवाया । यह सब परम-पावन दलाई लामा जी हमलोगों के अनुरोध पर जब भी आये, उन्होंने बोधि वृक्ष का रोपण किया, यह सब काम किया गया है । एक-एक तरह से वहां पर बोधि वृक्ष का काम किया गया है ।

आप लोगों को मालूम है कि वहां पर करुणा स्तूप का निर्माण कराया गया है, बुद्ध स्मृति संग्रहालय का भी निर्माण कराया गया है । कितना अच्छा बुद्ध स्मृति संग्रहालय बनाया गया है बुद्ध स्मृति पार्क में, उसमें पहले मेडिटेशन केन्द्र हमलोगों ने बनवाया था और जो वहां पर बुद्ध स्मृति पार्क में करुणा स्तूप बना है, इसके बारे में सब लोगों को जानना चाहिए कि उस करुणा स्तूप में पांच देश - जापान, म्यांमार, साऊथ कोरिया, श्रीलंका एवं थाईलैंड से भगवान बुद्ध का अवशेष, वहां पर रीलिक्स मिला था, वहां पर किया गया और उसके अलावा परम-पावन दलाई लामा जी ने भी वहां के लिए दिया है तो वहां पर छः बोधि वृक्ष लगे हुए हैं, यह अच्छी तरह जान लीजिये जो सबकुछ वहां है, अवशेष है ।

यहाँ हमारे भाई सुशील मोदी जी भी बैठे हुए हैं, बड़ी खुशी की बात है, ये जाते रहते थे तो इन्होंने हमको सत्यनारायण गोयनका जी के बारे में कई बात बताई थी, जो यहां पर बुद्ध स्मृति पार्क हमलोग बनाये हैं । किस तरह से होगा, क्या चीज चलेगी, जब ये हमें पूरी बात बताये और गोयनका जी की तरफ से यहां पर मैसेज आया कि साहब यहां पर विपश्यना केन्द्र बनाइये तो उनकी बात को तो मानना हमलोगों का फर्ज था इसलिए उनकी बात को मानकर के हमलोगों ने विपश्यना केन्द्र स्थापित करा दिया । जो मेडिटेशन केन्द्र है उसी का एक्सपेंशन करके पूरे तौर पर विपश्यना केन्द्र बना दिया और बड़ी खुशी की बात है कि कल श्रद्धेय राष्ट्रपति जी बुद्ध स्मृति पार्क को देखने वाले हैं और उसके विपश्यना केन्द्र को भी देखेंगे । उस विपश्यना केन्द्र के बारे में हम आपको

बता दें कि 3 जुलाई, 2018 से उसका नियमित संचालन हो रहा है और सैकड़ों की संख्या में यानी करीब-करीब 1200 लोगों ने इसमें भाग लिया है और हमलोग चाहते हैं कि हमारे जितने सरकारी लोग भी हैं, जो नौकरी करते हैं, इन सब लोगों को हम चाहते हैं कि जरा विपश्यना में जाकर के उसका अनुभव प्राप्त कर लीजिये और जो भी सरकारी कर्मचारी और अधिकारी वहां पर जायेंगे उनको पन्द्रह दिनों की छुट्टी हमलोग देंगे, दस दिन विपश्यना केन्द्र में यह सब चीज उनको वहाँ करनी है । तो यह बहुत खुशी की बात हुई जब कार्यक्रम के बारे में जानकारी मिली कि अन्य जगहों पर तो जा ही रहे हैं आप विपश्यना केन्द्र में भी जाइयेगा तो मुझे बड़ी खुशी हुई है । हम तो सब लोगों को कहेंगे कि विपश्यना केन्द्र जाकर देखें । जब इसको बनाना शुरू किये तो हमलोग कितनी बार वहां जा-जाकर के कि क्या-क्या करना है ? स्त्री-पुरूष सब आयेंगे उनके रहने का इंतजाम, जो ट्रेनर्स हैं उनके रहने का इंतजाम, उनके भोजन का इंतजाम, हर तरह से लोगों की सुविधा का इंतजाम, सबकुछ करवाया है । कल जाकर के देखियेगा, सब ठीक लगेगा और अगर आपका कोई सुझाव आ जायेगा तो हमलोग उसको और बेहतर करने की कोशिश करेंगे इसी के लिए आज हम इसका जिक्र कर रहे हैं । आप वहां भी जाने वाले हैं, अन्य जगहों पर तो जाने वाले हैं ही, मुझे यह सब जानकर खुशी हो रही है ।

आज जो यह कार्यक्रम हुआ है और इस तरह से जो सबकुछ इतने अच्छे ढंग से हुआ है और हर वर्ष अब इन कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है यहां के विधान सभा के अध्यक्ष की तरफ से, यह बहुत अच्छी बात है । इसके आगे और भी इस कार्यक्रम को करने के लिए इन्होंने बातचीत की है कि और को लायेंगे । इनकी कोशिश होगी कि आदरणीय प्रधानमंत्री जी को भी यहां पर लायेंगे और उनका भी एक कार्यक्रम यहां पर करवायेंगे तो यह सब इच्छा है ताकि सब लोगों को खूब अच्छे ढंग से मालूम हो जाय कि हमारा विधान सभा भवन क्या है, यहां विधान सभा भी है, विधान परिषद् भी है दोनों भवन है लेकिन जो विधान सभा के अध्यक्ष होते हैं उन्हीं के हाथ में सारा सबकुछ इसको ठीक ढंग से रखने का और सबकुछ करने का अधिकार मिला हुआ है इसलिए पूरे तौर पर करियेगा । और भी जितना, जो कुछ भी इसके एक्सपेंशन के लिए, इसके विकास के लिए जो कुछ भी करना है वह सब किया जायेगा ।

आदरणीय राष्ट्रपति जी, आज आप पधारे हैं बड़ी खुशी की बात है और जब आप आते हैं तो जैसा मैंने पहले कहा कि हमलोगों को तो खुशी होती है कि अब हमलोगों के असली बिहारी यहां पर आ गये हैं । इसलिए इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपका

अभिनन्दन करता हूं और इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए मैं विधान सभा के अध्यक्ष, विजय बाबू को विशेष तौर पर बधाई देता हूं । आप सब जो यहां इस कार्यक्रम में शामिल हुए हैं मैं आप सब लोगों का अभिनन्दन और स्वागत करता हूं । इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं ।

टर्न–3/21.10.2021

श्री फागू चौहान, महामहिम राज्यपाल : महामहिम राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद जी, माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी, बिहार विधान परिषद् के माननीय कार्यकारी सभापति श्री अवधेश नारायण सिंह जी, बिहार विधान सभा के माननीय अध्यक्ष श्री विजय कुमार सिन्हा जी, केन्द्र एवं राज्य सरकार के माननीय मंत्रीगण, माननीय सांसदगण, विधान परिषद् के सदस्यगण एवं विधायकगण, पूर्व सांसदगण एवं पूर्व विधान परिषद् के सदस्यगण एवं विधायकगण, प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक्स मीडिया के प्रतिनिधिगण, देवियो एवं सज्जनो !

बिहार विधान सभा के शताब्दी वर्ष समारोह के अवसर पर अपने बीच महामहिम राष्ट्रपति महोदय को पाकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि जिन्होंने अपनी उपस्थिति से इस समारोह की गरिमा को बढ़ाया है । बिहार की ऐतिहासिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विरासत अत्यंत समृद्ध है तथा यहां के लोकतंत्र की जड़ें काफी गहरी हैं । 'वैशाली' लोकतंत्र की जननी है जहां बज्जी संघ के नेतृत्व में प्रथम गणराज्य की स्थापना हुई थी ।

22 मार्च, 1912 को बंगाल प्रेसिडेंसी से अलग करके बिहार एवं उड़ीसा को मिलाकर एक पृथक राज्य की स्थापना की गई, जिसका मुख्यालय पटना निर्धारित किया गया । इस राज्य के अस्तित्व में आने पर इसके विधायी कार्य एवं संचालन हेतु गठित विधायी परिषद् एवं इसके सचिवालय के लिए एक नये भवन का निर्माण कराया गया, जो वर्तमान में बिहार विधान सभा का मुख्य भवन है तथा इसके 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष में यह समारोह आयोजित किया जा रहा है । बिहार विधान सभा ने लोकतंत्र को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है तथा अपनी लंबी यात्रा में विभिन्न लोकतांत्रिक सिद्धांतों, परम्पराओं एवं मर्यादाओं का सफलतापूर्वक निर्वहन किया है । इसकी जन–आकांक्षा को मुखर पहचान देने के साथ–साथ उनकी पूर्ति के लिए सार्थक प्रयत्न भी किया है । इसकी विभिन्न गतिविधियों और इसके द्वारा निर्मित कानून के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में विकासात्मक कार्यों को गति मिली है, प्रशासनिक संरचना सुदृढ़ हुई है

तथा इस तरह के अनेक प्रकार की सामाजिक बुराइयों को रोकने के लिए प्रयास किये गये हैं । मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि बिहार विधान सभा ने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन के वाहक के रूप में उत्कृष्ट और प्रभावशाली भूमिका निभाई है ।

प्राचीन काल में लिच्छवी, कपिलवस्तु, कुशीनगर, क्षमाग्राम, पिपली, सुपथा तितिरा, कोलांगा आदि गणराज्यों के प्रतिमूलक राज्य की व्यवस्था थी, जिसका संचालन सभा समिति एवं गणपत के माध्यम से हुआ करता था । इन गणराज्यों का अस्तित्व ईशा के पूर्व छठी सदी में देश के विभिन्न हिस्सों में चार सौ ईसवी तक कायम रहा । यद्यपि कि मध्यकाल के दौरान राज-काज की यह व्यवस्था समाप्त तो हो गई किन्तु ग्राम-सभा और पंचायतों का अस्तित्व बना रहा । इस प्रकार प्रतिवादी शासन व्यवस्था से हमारा पुराना परिचय रहा है । हमारे संविधान निर्माताओं ने लंबी बहस के बाद भारत के लिए संसदीय प्रणाली को अंगीकार किया था जो प्रकारांतर से गणराज्यों की प्रतिमूलक राज्य की व्यवस्था की अभिव्यक्ति है । संसदीय प्रणाली के तहत कार्यपालिका अपने लोकतांत्रिक वैधता विधायिका से प्राप्त करती है तथा उसके प्रति उत्तरदायी होती है । सदन का मुख्य कार्य कानून बनाना, जनोपयोगी मुद्दों पर बहस एवं चर्चा कराना तथा नीतियों का निर्णय लेना । सदन एक ऐसा मंच है जहां लोगों की इच्छा और जरूरतों को, गंभीर विचार-विमर्श तथा बहस के माध्यम से सामने ला पाते हैं किंतु हाल ही के दिनों में बैठक की घटती संख्या, बढ़ते व्यवधान, सदन के बार-बार स्थगित होने एवं बहस के गिरते स्तर के कारण आज चिंताजनक स्थिति उत्पन्न हो गई है । आमजन के मुद्दों पर चर्चा के लिए निर्धारित समय, हो-हल्ला और हंगामा की भेंट चढ़ जाता है तथा बिना किसी सार्थक बहस के विधेयक पारित हो जाते हैं, आज आम जन की आकांक्षाएं बढ़ गई हैं । अतः आवश्यक है कि विधायी फैसला लेने में सदस्यों की अधिकाधिक भागीदारी हो तथा तर्कपूर्ण बहस एवं गंभीर विचार-विमर्श के जरिये कानून बनाया जाय । वास्तव में सरकार और विपक्ष एक-दूसरे से भिन्न नहीं हैं । दोनों पक्षों के सदस्यों की जनता के वे प्रतिनिधि होते हैं, तब उनका उद्देश्य जनता की समस्याओं का समाधान एवं उनकी भलाई करना तथा देश एवं राज्य को विकसित करना है । यद्यपि कि सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों को ही अपने संकीर्ण हितों से ऊपर उठकर सदन के महत्व, विमर्श को सार्थक एवं प्रभावशाली बनाने हेतु गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए ताकि हमारे देश का संसदीय लोकतंत्र अक्षुण्ण रहे तथा अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल हो सके । मुझे विश्वास है कि बिहार विधान सभा के सदस्यगण सदन की गरिमा एवं लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने तथा

इसकी समस्याओं के विमर्श एवं समाधान का उचित मंच के रूप में उपयोग करने का ईमानदार प्रयत्न करेंगे । मैं महामहिम राष्ट्रपति महोदय को हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने लोकतंत्र के इस मंदिर के सौ वर्ष पूरे होने पर आयोजित समारोह को अपनी कृपापूर्ण उपस्थिति से गौरवान्वित किया है । बहुत-बहुत धन्यवाद, सब लोगों को बहुत-बहुत प्रणाम ।

टर्न-4/21.10.2021

श्री राम नाथ कोविन्द, माननीय राष्ट्रपतिः बिहार विधान सभा के शताब्दी वर्ष समारोह में प्रमुख रूप से उपस्थित राज्यपाल श्री फागू चौहान जी, मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी, विधान परिषद् के सभापति श्री अवधेश नारायण सिंह जी, विधान सभा के अध्यक्ष श्री विजय कुमार सिन्हा जी, उप मुख्यमंत्री श्री तारकिशोर प्रसाद जी, उप मुख्यमंत्री श्रीमती रेणु देवी जी, उपस्थित सभी विधायकगण एवं पूर्व विधायकगण, सांसदगण एवं पूर्व सांसदगण, बिहार से जुड़े प्रमुख जन सेवक गण, गणमान्य अतिथियो, देवियो और सज्जनो !

मुख्यमंत्री जी जब मुझे बिहारी राष्ट्रपति के रूप में संबोधित कर रहे थे तो मैं अंदर से, हृदय से गद-गद महसूस कर रहा था और गद-गद इसलिए भी महसूस कर रहा था कि इस देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र बाबू और इसी बिहार की धरती के राज्यपाल थे जो बाद में राष्ट्रपति बने डॉ0 जाकिर हुसैन साहब, उन्होंने जो विरासत छोड़ी है उस विरासत को आगे बढ़ाने का दायित्व मुझे मिला । सचमुच में मैं जब बिहार आता हूं तो मुझे लगता है कि मैं अपने घर में आया हूँ । कभी-कभी लोग हमारे सचिवालय में यह सवाल कर देते हैं कि बिहार सरकार का निमंत्रण हो या बिहार का अन्य कोई निमंत्रण हो तो आप कभी टाल-मटोल नहीं करते हैं तो मैं कहता हूँ कि बिहार से मेरा सिर्फ राज्यपाल का ही नाता नहीं है बल्कि कुछ और भी नाता है और उस नाते को मैं ढूढ़ता रहता हूँ जिसका मुख्यमंत्री जी कभी-कभी उसका उल्लेख कर देते हैं । भगवान बुद्ध को यहां जो ज्ञान की प्राप्ति हुई इस धरती पर और उन्होंने हम सब को जो एक पद्धति दी है विपश्यना पद्धति, उस कार्य में भी मैं कह सकता हूँ कि थोड़ा-बहुत मेरा योगदान रहा है और मुख्यमंत्री जी ने उस कार्य को आगे बढ़ाया है जिसके लिए मैं मुख्यमंत्री जी को आज हृदय से धन्यवाद भी देता हूँ ।

देवियो और सज्जनो, बिहार हमेशा से इतिहास रचता आया है, आज भी एक इतिहास रचा गया । इतिहास, 100 वर्ष की विधान सभा के कार्यकाल का आज हम

उत्सव मना रहे हैं और इसी मौके पर आज देश ने भी एक इतिहास रचा है, ठीक एक घंटे पहले सभी देश वासियों ने मिलकर जो हमारा 100 करोड़ के वैक्सिनेशन का लक्ष्य था उसको हम पार गये हैं । बिहार की रत्नगर्भा धरती और यहां के स्नेही लोगों ने मुझे हमेशा बहुत आकर्षित किया है, इसलिए जब भी मैं बिहार आता हूं तो मुझे एक सुखद अनुभूति होती है । बिहार में राज्यपाल के कार्यकाल के दौरान मुझे समाज के सभी वर्गों और क्षेत्रों के लोगों का भरपूर प्यार, स्नेह और सम्मान मिला । राष्ट्रपति के रूप में मेरा जब भी बिहार आना हुआ है तब भी मेरे प्रति वैसे ही प्रेम और सम्मान का एहसास मुझे होता रहा है । इसके लिए मैं बिहार के सभी निवासियों, जन सेवकों, अधिकारियों और बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ ।

देवियो और सज्जनो, हम सभी देशवासियों ने हाल ही में दुर्गा पूजा और दशहरा का त्योहार मनाया है । इस वर्ष हम सब संयोग से 75वें स्वतंत्रता दिवस का अमृत महोत्सव भी मना रहे हैं । बिहार विधान सभा के शताब्दी वर्ष का यह समारोह सचमुच में लोकतंत्र का उत्सव है । इस अवसर पर शताब्दी स्मृति स्तंभ का शिलान्यास कर के मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई है । इस कार्यक्रम में आप सभी की उत्साहपूर्ण उपस्थिति हमारे देश में विकसित स्वस्थ संसदीय परंपरा का एक अनूठा उदाहरण है । यह बार-बार कहते हुए मुझे फख्र होता है कि बिहार की धरती विश्व की प्रथम लोकतंत्र की जननी रही है । भगवान बुद्ध ने विश्व के आरंभिक गणराज्यों को प्रज्ञा तथा करुणा की शिक्षा दी थी । साथ ही, उन गणराज्यों की लोकतांत्रिक व्यवस्था के आधार पर उन्होंने अपने संघ के नियम निर्धारित किये थे । संविधान सभा के अपने अंतिम भाषण में बाबा साहब डॉ0 भीम राव अम्बेडकर ने यह स्पष्ट किया था कि बौद्ध संघों के अनेक नियम आज की संसदीय प्रणाली में भी उसी रूप में विद्यमान हैं । आज महाबोधि वृक्ष के पौधे का इस परिसर में प्रत्यारोपण कर के भी मैं स्वयं को सौभाग्यशाली अनुभव कर रहा हूँ ।

देवियो और सज्जनो, भगवान बुद्ध, भगवान महावीर और गुरू गोविन्द सिंह जी की आध्यात्मिक धाराओं से सिंचित बिहार की धरती का मुझ पर विशेष आशीर्वाद रहा है । यहां राज्यपाल के रूप में जनसेवा का मुझे अवसर मिला और उसी कार्यकाल के दौरान राष्ट्रपति पद हेतु निर्वाचित होकर उस पद की संवैधानिक जिम्मेदारियों के निर्वहन का अवसर भी प्राप्त हुआ । यह प्रतिभावान लोगों की धरती है । पूरे देश को गौरवपूर्ण बनाने वाली एक महान परंपरा की स्थापना इसी धरती पर नालंदा, विक्रमशिला व ओदंतपुरी जैसे विश्व स्तरीय शिक्षा केंद्रों, आर्यभट्ट जैसे वैज्ञानिक, चाणक्य यानी कौटिल्य

जैसे नीति निर्माता तथा अन्य महान विभूतियों द्वारा की गयी थी । आप सब उस समृद्ध विरासत के उत्तराधिकारी हैं और अब उसे आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी आप पर और बिहार के सभी निवासियों की है ।

देवियो और सज्जनो, बिहार की अस्मिता के लिए संघर्ष करने वाले डॉ0 सच्चिदानंद सिन्हा के प्रयासों के परिणाम तीन चरणों में प्राप्त हुए थे । पहले चरण में बिहार व उड़ीसा को बंगाल से पृथक करने का निर्णय सन् 1911 में घोषित हुआ । सन् 1912 में उड़ीसा व बिहार को लेफ्टिनेंट गवर्नर के राज्य का दर्जा दिया गया और राज्य का मुख्यालय पटना में बना । सन् 1913 में विधान परिषद् की पहली बैठक संपन्न हुई, यह पहला चरण था । दूसरा चरण, सन् 1919 का गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट अस्तित्व में आया जो सन् 1921 में प्रभावी हुआ । उस एक्ट के तहत उड़ीसा व बिहार को गवर्नर्स प्रॉविन्स अर्थात पूर्ण राज्य का दर्जा दिया गया तथा प्रांतीय विधायी परिषद् में निर्वाचित सदस्यों की संख्या बढ़ाई गयी । उसी वर्ष इस विधान सभा परिसर का निर्माण भी संपन्न हुआ । मतदान द्वारा चुने गये जनप्रतिनिधियों की अधिक संख्या से युक्त तथा उत्तरदायी सरकार की आरंभिक रूप-रेखा वाली पहली बिहार विधायी परिषद् की बैठक 7 फरवरी, 1921 को आयोजित हुई थी । अब तीसरा चरण, तीसरे चरण में सन् 1935 का गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट पारित हुआ । इस एक्ट के तहत बिहार एक अलग राज्य के रूप में स्थापित हुआ । दो सदनों से युक्त विधायिका का गठन किया गया और अंततः डॉ0 सच्चिदानंद सिन्हा का सपना पूरा हुआ ।

देवियो और सज्जनो, सन् 1935 के एक्ट के तहत स्वाधीनता के पहले दो बार चुनाव हुआ । उन दोनों चुनावों के बाद बिहार के श्री बाबू प्रधानमंत्री बने । स्वाधीनता के पहले और बाद के दशकों के दौरान श्री बाबू और अनुग्रह बाबू ने बिहार की राजनीति को परिभाषित किया । जब भारत की संविधान सभा द्वारा हमारे आधुनिक लोकतंत्र का नया अध्याय रचा जा रहा था तब एक बार फिर बिहार की विभूतियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । संविधान सभा के वरिष्ठतम सदस्य डॉ0 सच्चिदानंद सिन्हा प्रथम अध्यक्ष के रूप में मनोनीत हुए । 11 दिसम्बर, 1946 के ऐतिहासिक दिन देशरत्न डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद संविधान सभा के स्थायी अध्यक्ष चुने गये । इस पर अपनी विद्वतापूर्ण टिप्पणी करते हुए डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने संविधान सभा के अपने वक्तव्य में कहा था कि यह मात्र संयोग नहीं है कि हमारे अंतरिम अध्यक्ष डॉ0 सच्चिदानंद सिन्हा और हमारे स्थायी अध्यक्ष डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद दोनों ही बिहार से आते हैं । वे दोनों ही बिहार की भावना मधुरता

यानी मृदुता से ओतप्रोत हैं और यह मृदुता ही भारत की मूल भावना है । बिहार के लोगों की मधुरता को रेखांकित करते हुए डॉ0 राधाकृष्णन ने महाभारत के एक श्लोक का उल्लेख किया था, जिसे मैं आप सब के साथ आज साझा करना चाहूँगा । उस श्लोक में कहा गया है:

मृदुना दारूणं हन्ति मृदुना हन्ति अदारूणम् ।
नासाध्यम् मृदुना किंचित् तस्माद् तीक्ष्णतरम् मृदु ।।

अर्थात, मधुर स्वभाव से कठिन स्थितियों पर विजय पायी जा सकती है । मधुर स्वभाव से सामान्य स्थितियों को वश में किया जा सकता है । मधुर स्वभाव के द्वारा कुछ भी असाध्य नहीं है । अत: मधुर स्वभाव ही सबसे प्रभावी अस्त्र होता है ।

देवियो और सज्जनो, संविधान सभा में डॉ0 सच्चिदानंद सिन्हा व डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद के अलावा श्री अनुग्रह नारायण सिन्हा, श्री कृष्ण सिन्हा, दरभंगा के महाराजा कामेश्वर सिंह, श्री जगत नारायण लाल, श्री श्याम नन्दन सहाय, श्री सत्यनाराण सिन्हा, श्री जयपाल सिंह, बाबू जगजीवन राम, श्री राम नारायण सिंह और श्री ब्रजेश्वर प्रसाद जैसी बिहार की अनेक विभूतियों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया । सामाजिक, आर्थिक न्याय, स्वतंत्रता, समता और सौहार्द की आधारशिला पर निर्मित हमारा लोकतंत्र प्राचीन बिहार के लोकतांत्रिक मूल्यों को आधुनिक क्लेवर में समेटे हुए पुष्पित व पल्लवित हो रहा है । इसका श्रेय बिहार की जनता और आप सभी निर्वाचित जन प्रतिनिधियों को जाता है । इसी प्रकार बिहार की वर्तमान विधायिका के दोनों सदनों को सुचारू रूप से संचालित करने का श्रेय विधान परिषद् के सभापति श्री अवधेश नारायण सिंह जी तथा विधान सभा के अध्यक्ष श्री विजय कुमार सिन्हा जी को जाता है ।

देवियो और सज्जनो, आज से लगभग 2400 वर्ष पूर्व एक गरीब महिला जिसका नाम मुरा था, उसके पुत्र चन्द्रगुप्त मौर्य को मगध का सम्राट बनाने से लेकर 1970 के दशक में ईमानदारी और उज्ज्वल चरित्र के प्रतीक जननायक कर्पूरी ठाकुर को मुख्यमंत्री बनाने तक इस धरती ने समतामूलक परंपरा स्थापित की है । बिहार में सामाजिक और आर्थिक बदलाव के लिए प्रयास और योगदान हेतु राज्य के सभी पूर्ववर्ती मुख्यमंत्री भी प्रशंसा के पात्र हैं । हमारे स्वाधीन गणतंत्र की स्थापना के लगभग 25 वर्ष बाद जब भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों पर कुठाराघात हुआ तब बिहार के ही लोकनायक जय प्रकाश नारायण जी ने लोकतंत्र के हित में देशव्यापी संघर्ष को असाधारण नेतृत्व प्रदान किया था । राज्यपाल के रूप में बिहार विधान मंडल के दोनों सदनों के समवेत्

अधिवेशन को मुझे तीन बार संबोधित करने का संयोग प्राप्त हुआ था । बिहार में सुशासन तथा न्याय के साथ विकास की दिशा में जन कल्याण एवं समग्र विकास के कार्यक्रमों को आगे बढ़ाया गया है । यह तथ्य सराहनीय है कि विगत चार वर्षों में बिहार के स्टेट जीडीपी में प्रभावशाली वृद्धि हुई है ।

देवियो और सज्जनो, बिहार में जनसेवा की समतामूलक परंपरा को आगे बढ़ाते हुए श्री नीतीश कुमार जी ने स्वाधीनता के बाद सबसे लंबे समय तक मुख्यमंत्री पद के निर्वहन का कीर्तिमान स्थापित किया है । उनका सहयोग मुझे बिहार के राज्यपाल के रूप में भी मिला और भारत के राष्ट्रपति के रूप में भी मिलता रहा है ।

देवियो और सज्जनो, सन् 1921 की विधान सभा के अपने संबोधन में गवर्नर लार्ड सिन्हा ने कहा था कि मादक पदार्थों अथवा मदिरा के उत्पादन एवं बिक्री पर रोक लगाने के लिए कोई सुनिश्चित नीति होनी चाहिये । हमारे संविधान में राज्य के नीति निर्देशक तत्वों के तहत लोक स्वास्थ्य को सुधारने का राज्य का कर्त्तव्य स्पष्ट रूप से उल्लेखित है । इस कर्त्तव्य में मादक पेय और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक पदार्थों के सेवन का निषेध करना भी शामिल है । गांधी जी के सिद्धांतों पर आधारित इस संवैधानिक अनुच्छेद को बिहार विधान सभा द्वारा कानून का दर्जा देकर लोक स्वास्थ्य तथा समाज विशेषकर कमजोर वर्ग की महिलाओं के हित में एक बहुत कल्याणकारी अधिनियम बनाया गया । उस अधिनियम को कानून का दर्जा प्रदान करने का अवसर मुझे भी मिला था ।

देवियो और सज्जनो, कुछ ही दिनों बाद हम सभी देशवासी दीपावली और छठ का त्योहार मनायेंगे । छठ पूजा अब एक ग्लोबल फेस्टिवल बन चुका है । नवादा से न्यू जर्सी तक और बेगूसराय से बोस्टन तक छठी मैया की पूजा बड़े पैमाने पर की जाती है । यह इस बात का प्रमाण है कि बिहार की संस्कृति से जुड़े उद्यमी लोगों ने विश्व स्तर पर अपना स्थान बनया है । मुझे विश्वास है कि इसी प्रकार स्थानीय प्रगति के सभी आयामों पर भी बिहार के प्रतिभावान व परिश्रमी लोग सफलता के नए मानदंड स्थापित करेंगे ।

प्रिय विधायकगण, राज्य की जनता आप सभी जनप्रतिनिधियों को अपना भाग्य विधाता मानती है । उनकी आशाएं और आकांक्षाएं आप सब पर ही टिकी होती हैं । सभी देशवासियों में जिनमें बिहार के निवासी भी शामिल हैं अपने बेहतर भविष्य के लिए उनकी ललक दिखायी पड़ती है । मुझे विश्वास है कि आप सभी विधायकगण अपने आचरण और कार्यशैली से जनता की आशाओं को यथार्थ रूप देने का प्रयास करते

रहेंगे । मुझे प्रसन्नता है कि आज आप सब ने सामाजिक अभिशापों से मुक्त, वरदानों से युक्त तथा सम्मानों से पूर्ण बिहार के निर्माण के लिए संकल्प अभियान का शुभारंभ किया है । मेरी यह कामना है कि आप सभी विधायकगण आज इस सदन में लिए गये संकल्पों को कार्यान्वित करें तथा बिहार को एक सुशिक्षित, संस्कारित और सुविकसित राज्य के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील बने रहें । आपके ऐसे प्रयासों के बल पर मुझे विश्वास है कि सन् 2047 तक यानी देश की आजादी के शताब्दी वर्ष तक बिहार ह्यूमन डेवलपमेंट के पैमानों पर एक अग्रणी राज्य बन सकेगा । इस प्रकार राज्य की विधायिका की शताब्दी का यह उत्सव सही मायनों में सार्थक सिद्ध होगा ।

गंगा नदी के वरदान से युक्त इस क्षेत्र में आकर मुझे बिहार में जन्मे मनीषी कवि रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित पंक्तियां याद आती हैं । दिनकर जी ने कहा था:

गूंज रहे तेरे इस तट पर गंगे गौतम के उपदेश,
ध्वनित हो रहे इन लहरों में देवि अहिंसा के संदेश ।

ऐसे उदात्त मूल्यों को बिहार के विधायकगण अपनी कार्यशैली में ढालेंगे और बिहार की विधान सभा राज्य की उन्नति के स्वर्णिम अध्याय लिखेगी ।

इसी भावना के साथ मैं आप सभी को आगामी त्योहारों के लिए अग्रिम बधाई देता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि सभी बिहारवासी प्रगति के उच्च शिखर पर पहुंचें । धन्यवाद, जय हिन्द ।

टर्न–5/21.10.2021

श्री अवधेश नारायण सिंह, कार्यकारी सभापति, बिहार विधान परिषद : भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द जी, महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान जी, माननीय मुख्यमंत्री, बिहार, श्री नीतीश कुमार जी, माननीय अध्यक्ष, बिहार विधान सभा, श्री विजय कुमार सिन्हा जी, मंच पर विराजमान माननीय उपमुख्यमंत्री श्री तारकिशोर प्रसाद जी और माननीया उपमुख्यमंत्री श्रीमती रेणु देवी जी और इस गरिमामय कार्यक्रम के साक्षी बने हुए सभी महानुभावगण !

सबसे पहले मैं माननीय राष्ट्रपति महोदय के प्रति आभार प्रकट करता हूं, उन्हें हृदय से धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने बिहार विधान सभा भवन शताब्दी वर्ष समारोह में

अपनी गरिमामय उपस्थिति की स्वीकृति प्रदान करने की कृपा की है । आपके द्वारा राष्ट्रपति का पद सुशोभित करने से बिहार अधिक गौरवान्वित हुआ है । हमलोगों का यह सौभाग्य है कि आपने अपने कर-कमलों से पवित्र बोधि वृक्ष के शिशु पौधे का रोपण किया और शताब्दी स्मृति स्तंभ का शिलान्यास करने की कृपा की है । बिहार विधान मंडल की ओर से और बिहार की जनता की ओर से हम आपके प्रति पुनः आभार व्यक्त करते हैं ।

महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान जी को हम हृदय से धन्यवाद देते हैं जिन्होंने इस कार्यक्रम में उपस्थिति प्रदान करने की कृपा की है । आपके संबोधन से हम सभी कृतार्थ हुए हैं ।

बिहार के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी को हम हृदय से धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने इस आयोजन में अपनी गहरी दिलचस्पी दिखाई और आयोजन में हमारा मार्गदर्शन भी किया । आपने बिहार के विकास को नई दिशा दी है और विकास के नये आयाम जोड़े हैं, उनके संबोधन से हम सब भी लाभान्वित हुए हैं ।

माननीय अध्यक्ष, बिहार विधान सभा, श्री विजय कुमार सिन्हा जी के प्रति धन्यवाद ज्ञापन महज एक औपचारिकता है । वस्तुतः वे काफी समय से दिन-रात एक कर इस आयोजन की सफलता की तैयारी कर रहे थे ।

यहां उपस्थित हमारे बिहार के उपमुख्यमंत्री माननीय तारकिशोर प्रसाद जी की उपस्थिति से हम लाभान्वित हुए हैं, गौरवान्वित हुए हैं । माननीया उपमुख्यमंत्री रेणु जी की उपस्थिति से हम काफी गौरवान्वित हुए हैं ।

इस अवसर पर उपस्थित सभी महानुभावों को भी मैं धन्यवाद देता हूं । बिहार सरकार के अधिकारीगण, विधान सभा के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण, प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रतिनिधिगण और इस महती कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना योगदान देनेवाले सभी लोगों को मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूं । जय हिन्द ।

(राष्ट्र धुन)

(तत्पश्चात् समारोह कार्यक्रम का समापन हुआ)